प्रथम अध्याय

रेवतीरसन शर्मा के नाटकों की कथावस्तु का परिचय

प्रथम अध्याय

''रेवतीसरन शर्मा के नाटकों की कथावस्तु का परिचय''

विषय प्रवेश -

केवल ऑल इंडिया रेड़ियो के लिए नाटक लिखनेवालों में 'रेवतीसरन शर्मा' का स्थान उल्लेखनीय है। उन्होंने लग-भग एक सौ पचास (150) रेड़ियो नाटक लिखे हैं । उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन से कथानक चुने हैं । कुछ नाटक भारत-पाक संबंधों पर आधारित हैं । नारी जीवन तथा मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी उनके नाटकों में उभरकर आयी हैं। डॉ. राधेश्याम वाजपेयी लिखते हैं कि - ''शर्माजी अपने नाटकों के कथानक बड़ी सतर्कता से चुनने में पटु है। उन्होंने अपने नाटकों में संस्कारों के बंधनों को धराशायी कर दिया है । वे मानव स्वभाव के चितेरे हैं।''[1] उनके आँसू, 'उतार-चढाव', नम्मेमौत, क्रिस्मस की शाम, अभागिन, रोशनी, डाक्टर बीबी, इन्सान, अमावस का अंधःकार आदि प्रमुख रेड़ियो नाटक हैं।

युगसापेक्ष विषयों का चयन रेवतीसरन शर्मा के नाटकों की विशेषतः है। साठोत्तरी नाटककारों में रेवतीसरन शर्मा का स्थान प्रमुख है। उनका आदर्श विचारों को लेकर लिखा 'चिराग़ की लौं' यह पहला तीन अंकी नाटक सन 1959 में प्रकाशित हुआ है। सन 1960 के आस-पास हिंदी नाटक साहित्य में प्रचलित आदर्शवादी विचारधारा का प्रभाव 'रेवतीसरन शर्मा'पर दिखाई देता है।

रेवतीसरन शर्मा के 'चिराग़ की लौं' अँधेरे का बेटा और न धर्म, न ईमान' आदि प्रमुख नाटक हैं। 'चिराग़ की लौं' रेवतीसरन शर्मा का आदर्शवादी नाटक है। इसका कथानक सामाजिक स्थिति की वह काली तस्वीर प्रस्तुत करता है, जिसके दृश्य काला बाजार-भ्रष्टाचार और अनैतिकता की स्याही से रंगे हुए हैं। साथ ही यह प्रेम के उस खोखले आदर्श को प्रस्तुत करता हैं, जो यथार्थता की निर्मम थपेड़े खाकर कच्चे शीशे के भाँति चूर-चूर हो जाता है। इस नाटक में लेखक ने दिखाया है कि आज के भौतिक वादी इस युग मैं नैतिक पतन के कारण ईमानदारी से आदर्श मूल्यों लेकर जीना कठिन कार्य हो गया है और विशेष कठिनाई उस समय होती है, जब कोई पत्नी ही

अपने पति को अनैतिक कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में चरित्रवान व्यक्ति के लिए पत्नी का साहचर्य छोड़ना आसान है, सिद्धातों और आदर्शमूल्यों को नहीं।

'अँधेरे का बेटा' में नाटककार ने दिखाया है कि आदमी 'अँधेरे का बेटा' है। उस में कुछ काला, कुरूप और कुत्सित है । परंतु उसकी एक विशेषतः है कि वह 'अँधेरे का बेटा' होते हुए भी रोशनी की तरफ जाता है। स्वयम् नाटककार ने लिखा है- ''हमारे साहित्य में सिपाही के साथ कुछ इतना ज्यादा 'आदर्श'जोडा गया है कि उसका 'जीवित यथार्थ'सिर से गायब हो गया है और उसके अंदर की मानवीय कमजोरियाँ और मानसिक कशमकश हमारे साहित्य में बहुत कम चित्रित नजर आते हैं ।''[2] नाटककार ने प्रस्तुत नाटक में सिपाही को उसके मानवीय परिवेश में देखने की कोशिश की है और वीरता, कायरता जीवन और कर्तव्य की माँग को ज्यादा निकट और गहराई से देखने का प्रयास किया है।

'न धर्म, न ईमान' शर्माजी का आदर्शवादी नाटक है, जिस में आदर्श प्रेम की वास्तविकताओं का परिचय एवं मानव हृदय में जलते प्रेम के दिये की क्षीण लौं पर शाश्वत आदर्श प्रेम के दर्शन कराये हैं। यह नाटक हमारे पारिवारिक संदर्भ से जुड़ा प्रेम और विवाह की समस्या का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता हुआ आदर्श प्रेम को रेखांकित करता है, जिस में कोई जांति-बंधन नहीं होते उस में तो पारस्पांरिक दो हृदयों की मिलन की अभिलाषा रहती हैं। नाटककार ने परंपरा और आधुनिकता से उत्पन्न जीवन की समस्याओं के संदर्भ में नवीन मूल्यों को स्वीकार किया है - और नायक धर्म, इतिहास और नैतिकता को नकारता हुआ आदर्श प्रेम की भूमिका का निर्वाह करता हैं।

'रेवतीसरन शर्मा' के नाटकों का धरातल मुख्यतः भावात्मक हैं। 'आँसू और नम्मे की मौत' की पृष्टभूमि भावुकता है किंतु बाद में नाटकों में इस प्रवृत्तिपर नियंत्रण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता हैं। 'उतार-चढ़ाव' में लेखक ने एक मनोवैज्ञानिक समस्या ली है। पति-पत्नि से सेवा की आशा रखन्ना है, इसके अभाव में वह स्वयम् प्रेम के अभाव का आभास करता है। इस नाट्यकृति में शैलेंद्र के चरित्र में बड़ा ही स्वाभाविक अंतदूर्वन्दव चित्रित किया गया है। 'रोशनी'नाटक का कथानक एक नाटकीय स्थितिपर आधारित है। उदा.रंजन की नौकरी छुट गई है, उसकी माँ ने इस बात को छिपाकर उसका विवाह बड़े घर की बेटी कांता से कर दिया है। रंजन को पुनः नौकरी प्राप्त हो जाती है। यहाँपर नाटक समाप्त होता है।

'रेवतीसरन शर्मा' के सभी नाटक अभिनेय हैं। उन्होंने रंगमंच और अभिनेय को दृष्टि में रखकर ही नाटकों का निर्माण किया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रेवतीसरन शर्मा के नाटक कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, समस्या और रंगपंचीयता एवं अभिनेयता की दृष्टि से सफल रहे हैं।

प्रस्तावना -

भारतीय साहित्य में नाट्य परंपरा बहुत प्राचीन रही है। नाटक की उत्पत्ति के संबंध में विद्‌वानों में विभिन्न मत मतांतर है। " डॉ.रिजवे ने नाटक की उत्पत्ति के संदर्भ में नाटक के मूल में मृतक वीरों की पूजा को ही प्रधान माना है। उनके अनुसार प्राचीन काल में महान मृतात्माओं के महत्त्व तथा उनके प्रति अपना आदर भाव प्रकट करने के लिए नाटक अभिनीत किए जाते थे।" [3] यह कथन अंशिक रूप में सत्य है। यदि उसे पूर्ण रूप से सत्य मान लिया जाए तो नाटक की सीमा को बहुत ही संकुचित कर देना पड़ेगा। डॉ.पिसेळ कठपुतलियों के नाच से नाटक की उत्पत्ति मानते हैं। प्राचीन नाटकों में 'सूत्रधार' स्थापक आदि शब्दों का प्रयोग होने के कारण इस बात की पुष्टि होती हैं। कठपुतलियों का खेल भी तो एक प्रकार से नाटक ही होता है। उस में पात्रों का स्थान केवल कठपुतलियाँ ले लेती हैं।

पश्चिमी विद्‌वान नाटक की उत्पत्ति वेदों से मानते हैं। वेदों से आये कुछ संवादों को नाटक का मूल रूप माना जा सकता है। 'वाल्मीकि रामायण' 'हरिवंश पुराण' आदि ग्रंथों में भी नाटक का उल्लेख मिलता हैं। इससे सिद्‌ध होता है कि हमारा नाट्य साहित्य अत्यंत प्राचीन है।

नाट्याचार्य भरतमूनि ने 'नाट्यशास्त्र' में सर्वप्रथम नाटक का सूक्ष्म विवेचन किया है। उनके अनुसार "अनुभव और विभाव संयुक्त रचना काव्य कहलाती है। गीतादि से रंजित होकर नटों द्‌वारा जब उसका प्रदर्शन होता हैं तो उसे नाटक कहते हैं।" [4] कथावस्तु ही नाटक का आधारभूत और महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। मानव के शरीर में अस्थियों का जो महत्त्व होता हैं। वही महत्त्व नाटक में कथावस्तु का होता है। नाटककार को अपनी कथावस्तु का चयन करने में उपन्यासकार के समान अधिक सामग्री का उपयोग करने का अधिकार नहीं होता। उसे अभिनय के लिए निश्चित समय का ध्यान रखते हुए अन्य मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है। साथ ही साथ उसकी कथावस्तु इतनी बड़ी होनी चाहिए कि जिसे तीन-चार घंटों में खोला जा सके।

आ. भरतमूनि में कथावस्तु को दो प्रकारों में विभाजित किया है -

1. अधिकारिक कथावस्तु

1.1 नाटक की मुख्य कथा

2. प्रासंगिक कथावस्तु - ''प्रसंगवश आयी हुई गौण कथा ये मुख्य कथा के विकास ओर सौदर्यवर्धन में सहाय्यक होती है। अधिकारिक कथावस्तु नायक के जीवन से संबंधित होती है। और यह कथा नाटक के प्रारंभ से लेकर अंत तक चलती रहती है। प्रासंगिक कथावस्तु मुख्य कथा में योग देनेवाली होती है। प्रासंगिक कथाएँ एक से लेकर अनेक होती हैं। प्रासंगिक कथा नायक के चरित्र विकास में सहायता देती है।

प्रासंगिक कथा दो प्रकार की होती है - 1. पताका 2. प्रकरी

कथावस्तु के तीन आधार है -

1. प्रख्यात- जिसका आधार इतिहास, पुरान, जनश्रुति होती है।

2. उत्पादय- इसके अंतर्गत नाटककार की अपनी कल्पना होती है।

3. मिश्र - इस में इतिहास और कल्पना का सामंजस्य होता है। नाटक के कथावस्तु की पाँच कार्यावस्थाएँ होती हैं

1. प्रारंभ 2. विकास 3. संघर्ष 4. चरमसीमा और 5. अंत आदि का अंतर्भाव होता है ।

कथावस्तु -

'चिराग़ की लौं'

'चिराग़ की लौं' यह रेवतीसरन शर्माजी का पहला तीन अंकी नाटक है। इसका प्रकाशन सन 1969 में हुआ। इस नाटकद्वारा यह दिखाया गया है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में रिश्वत और भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं ने भीषण रूप धारण कर लिया था। नैतिकता का पतन और मानवीय आदर्श मूल्यों का ऱ्हास हुआ।

रिश्वतखोर वृत्ति के कारण कानून के रखवाले ही कानून को तोड़ रहे हैं। आज के भौतिकवादी युग में सच्चे स्नेह और प्यार के लिए भी पैसों की आवश्यकता होती हैं। इस युग में आदर्श प्रेम एक कोरी कल्पना है। प्रेम के खोखले आदर्शों की प्रतीति जीवन के संकटपूर्ण काल में आ जाती है। आदर्श प्रेम केवल दिखावा है। इन बातों को महसूस करके लेखक ने प्रस्तुत नाटक का निर्माण किया है।

स्वयं नाटककार नाटक की भूमिका में लिखते हैं - ''इस में आज की कुछ सामाजिक प्रवृत्तियों का चित्रण हैं। ''[5] 'चिराग़ की लौं' यह सामाजिक समस्याप्रधान नाटक है। इस नाटक का मुख्य उद्देश्य सामाजिक समस्याओं, भ्रष्टाचार, रिश्वत, दलाली, तथा अनैतिकता का चित्रण करते हुए आदर्श और नैतिक मूल्यों का चित्रण करना ही है। प्रस्तुत नाटक के बारें में डॉ.श्याम शर्मा लिखते हैं:- ''इसका कथानक सामाजिक स्थिति की वह काली तस्वीर प्रस्तुत करता है, जिसके दृश्य काला-बाजार भ्रष्टाचार और अनैतिकता की स्याही से रंगे हुए हैं। साथ ही यह प्रेम के उस खोखले आदर्श को भी प्रस्तुत करता है, जो यथार्थता की निर्मम थपेड़े खाकर कच्चे शीशे की भाँति चूर-चूर हो जाता है।''[6]

इस नाटक का नायक किशोर एक आदर्शवादी और ईमानदार इन्कमटैक्स ऑफ़िसर है। वह अपने ईमानदारी और आदर्शवाद से समाज में फैले भ्रष्टाचार रूपी अँधेरे को कम करने का प्रयास करता है। किशोर के ऑफ़िस के सभी लोग रिश्वत लेते हैं, लेकिन किशोर उस दफ्तर का अत्यंत ईमानदार ऑफ़िसर है। वह अमीर घर की लड़की तारा से प्यार करता है। तारा की तुलना में किशोर सर्वसामान्य था, इसलिए तारा के घरवाले तारा का विवाह किशोर के साथ नहीं करना चाहते थे। लेकिन तारा किशोर के आदर्शवाद और ईमानदारी पर मुग्ध होकर घरवालों की इच्छा के विरूद्ध किशोर के साथ विवाह करती हैं। वे दोनों एक सामान्य मकान में रहते थे। उन्हें एक बच्ची भी थी। उनका वैवाहिक जीवन सुखी था।

तारा, अमीर घर की बेटी होकर भी सामान्य परिवारवाले किशोर के साथ हँसी-खुशी से रहती थी। किशोर कभी तारा के मायके के ऊँचे मकान से अपने सामान्य मकान की तुलना करता तो तारा नाराज हो जाती थी। तारा प्राप्त परिस्थिति में ही खुश थी। प्रारंभ में वह किशोर का पूरा सहयोग देती है लेकिन बाद में उसके आदर्शवाद और ईमानदारी से तंग आकर उसका विरोध करती है। अन्य भ्रष्टाचारी अधिकारियों की पत्नियों की तरह

वह भी किशोर के पद का लाभ उठाना चाहती है। लेकिन किशोर समाज तथा सरकार की भलाई के लिए ईमानदारी से कार्य करता रहता है।

मि.मेहता भी किशोर के ऑफ़िस में ही काम करता है। स्वयंम् एक इन्कमटैक्स इन्स्पेक्टर होते हुए भी भ्रष्टाचार रूपी अँधेरे को और गहरा बना देता है। वह अपने पद का लाभ उठाकर संपूर्ण वैभव प्राप्त करता है। एक दिन वह अपने पत्नी को साथ लेकर किशोर और तारा का नया मकान देखने उसके घर जाता है। दो कमरे में सजा किशोर और तारा का मर्यादित संसार देखकर मिसेज मेहता अपने ऐश्वर्य का रोब दिखाती है। वह तारा की गरीबीपर व्यंग्यबाण चलाते हुए कहती है -"अजी, आपके दो बिस्कुट खाने बैठे तो हमारा सात रूपये का नुकसान हो जायेगा। सबसे ऊँची किलासकेटिकिट लिये हैं, साढ़े तीन - तीन रूपयेवाले।"[3] मिसेज मेहता तारा को उसकी गरीबी का पूरा-पूरा एहसास दिलाती है। इसप्रकार मिसेज मेहता भी तारा के मन में वैभव पाने की लालसा जगाती है।

तारा देखती है कि किशोर के दफ्तर के सभी लोग रिश्वतखोर हैं। वे बेईमानी की कमाई खाते हैं। इसी कमाई से उन्होंने अस्सी हजार का मकान बनवाया है, गाड़ियाँ खरीदी हैं और घर में काम करने के लिए नौकर रखे हैं । यह सब देखकर तारा अपने आदर्शवादी पति को बेईमानी के रास्ते पर चलने की बिनती करती है। तारा में हुए इस बदलाव को देखकर किशोर चिंतित होता है। वह उसे समझाने का प्रयास करता है। लेकिन तारा को किशोर के आदर्शवाद और ईमानदारी पर क्रोध आता है। इस बात पर आदर्शवादी किशोर और धनलोभी तारा में बार-बार संघर्ष चलता है। तारा अपने पति के ईमानदारी और आदर्शवाद से तंग आती है। वह ईमानदारी एवं आदर्शवाद को त्यागकर भ्रष्टाचारी रूपी अँधेरे में डुबकर वैभव पाने की इच्छा प्रकट करती है।

मिल-मालिक जयंत की रंगीन पत्नी रानी, तारा की पुरानी सहेली है। रानी का पति जयंत भ्रष्टाचार को बढ़ावा देनेवाला एक मिल-मालिक है। जयंत अपना सही उत्पन्न छिपाता है। उसे जितना इन्कमटैक्स भरना चाहिए, उतना वह नहीं भरता। इसी बात को छिपाने के लिए जयंत किशोर को रिश्वत देना चाहता है। मगर किशोर रिश्वत लेने से इन्कार करता है। जब किशोर रिश्वत लेने से इन्कार करता है, तब जयंत अपना काम करने के लिए रानी को तारा के घर भेज देता है और रानी द्वारा तारा को अपने जाल में फँसाता है।

रानी, तारा से मिलने उसके घर आती है। जानबुझकर उसे अपनी कार में बिठाकर अपने घर ले जाती है। उसे अपना अलिशान मकान दिखाती है। वह हमेशा तारा को कॉलेज-जीवन एवं उस समय के वैभव की याद दिलाती है और तारा के मन में वैभव पाने की इच्छा जागृत करती है। रानी का ऊँचा मकान, गाड़ी तथा घर की ऊँची-ऊँची वस्तुएँ देखकर तारा का मन विचलित होता है। उसका ईर्ष्यालु नारीमन वैभव चाहने लगता है। आदर्शवाद और ईमानदारी पर प्रेम करनेवाली तारा में आदर्श और ईमानदारी के प्रति नफ़रत पैदा होती है।

तारा, रानी का वैभव देखकर किशोर से कहती है- ''मैं क्या बताऊँ, कितना बड़ा बेड रूम ..... कितना क़ीमती कालीन ..... कितने बड़े-बड़े वार्ड रोब और उन में सिल्क और रेशम की कितनी कीमती, कितनी रंग-बिरंगी साड़ियां ! (हसरत से) सच, रानी सचमुच रानियों की तरह रहती है।''[8] रानी का यह वैभव देखकर लालची तारा उसके माया जाल में बुरी तरह फँस जाती है। किशोर तारा को रानी से दूर रहने के लिए कहता है। लेकिन तारा रानी से और गहरे संबंध बनाती है। तारा को रानी तथा गिरीश की हर बात मीठी लगती है, ओर किशोर की हर बात कड़वी।

तारा किसी भी हालत में अमीर बनना चाहती है। अमीर बनने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार होती है। तारा को न 'एकाउंट' आता है न 'टाइपिंग' फिर भी वह रानी के बहकावे में आकर गिरीश के ऑफ़िस में नौकरी करने के लिए तैयार होती है। किशोर जानता है कि तारा के नौकरी के नामपर क्या होनेवाला है। इसलिए वह तारा को गिरीश के ऑफ़िस में नौकरी करने को मना करता है। मगर वह किशोर की कोई बात नहीं मानती। वह किशोर को भी रिश्वत लेने को कहती है। मगर किशोर रिश्वत लेकर अपनी ईमानदारी तथा आदर्शवाद को कलंक नहीं लगाना चाहता।

अब तारा रानी के कार से बड़ी - बड़ी पार्टियों मे जाती है। लेटेस्ट डिझाईन के कपड़े पहनती है। अब वह तीस रूपये की शाल, साठ रूपये का कोट, दस-बारह की साड़ी, बे-मेल ब्लाउज तथा चार-चार रूपये के चप्पले नहीं पहनना चाहती। साथ ही वह मि. मेहता तथा अन्य अफ़सरों का जिक्र करके किशोर को रिश्वत लेने की सलाह देती है। तारा में इस प्रकार का परिवर्तन देखकर किशोर पहले स्तंभित होता है और बाद में उसपर क्रोधित होता है। मगर तारा पर उसका कोई असर नहीं होता। वह हर हालत में रिश्वत लेना चाहती है। किशोर के समझानेपर उसे कहती है - ''मेरे तो कान पक गए हैं, तुम्हारे ईमान को, तुम्हारे आदर्श को, और तुम्हारे

संन्यासीपन को सुनकर - जिसने मुझे दुनिया की हर चीज़ से वंचित कर दिया है ।" [9] फिर भी आदर्शवादी किशोर अपनी पत्नी को बार-बार सचेत करने का प्रयास करता है ।

तारा, गिरीश, रानी तथा जयंत के बहकावे में आकर पूर्णतः फँस जाती है । उसकी आत्मा रानी के बंगलों, जयंत के कारों में और गिरीश के पार्टियों में भटकती रहती है । अब वह पहले जैसा सामान्य जीवन नहीं जीना चाहती । अब वह रानी जैसे रहने लगती है, तो किशोर की तनख्वाह कम पड़ने लगती है । तब तारा गिरीश के ऑफ़िस में 500 सौ रूपये के लिए नौकरी करने को तैयार होती है । किशोर ने पिताजी के आँख के आपरेशन के लिए बँक में रखे पैसे भी खर्च कर देती है । किशोर को वह बार-बार रिश्वत लेने को कहती है । तब उन दोनों में झगड़े होते हैं । उसी वक्त तारा को समझाते हुए किशोर कहता है - "जानती हो, रिश्वत लेकर केस छोड़ देने से क्या होगा ? लोग और बेधड़क होकर ब्लैक करेंगे । चीज़ें और महँगी हो जायेंगी । जीवन और कठिन हो जायेगा । रिश्वत लेकर हम उल्टे अपने-आप से दुश्मनी करेंगे ।"[10] इस प्रकार रिश्वत लेना किशोर को अपने आप से दुश्मनी लगती है ।

इस तरह किशोर समाज में पनप रही विषमता, अनैतिकता तथा भ्रष्टाचार को समाप्त करने की हर कोशिश करता है । दूसरों का शोषण करके उसे आराम का जीवन जीना कतई पसंद नहीं है । इसीलिए दूसरों की हँसी-खुशीपर जीनेवालों से वह नफ़रत करता हैं । तारा को भी कहता है कि "मुझे सिर्फ उस आदमी से नफ़रत है, जो दूसरों की हँसी-खुशी पर जीता है ।"[11] इसतरह किशोरके मन में सामान्य जनता के प्रति भी आस्था दिखाई देती है ।

किशोर तारा को रिश्वत लेने के दुष्परिणाम बताता है । मगर तारा उसकी एक नहीं सुनती । वह किशोरपर व्यंग्य-बाण चलाती है । किशोर के घर में उसका दम घुटने लगता है । वह किशोर को स्पष्ट कह देती है कि मुझे तुम्हारे आदर्श नहीं चाहिए बल्कि आराम और ऐश्वर्य से भरा रंगीला जीवन चाहिए । तारा विद्रोही स्वर में किशोर से कहती है - "मुझसे अब तरस-तरसकर नहीं जिया जाता । मुझे तुम्हारे ख़याल नहीं चाहिए, आदर्श नहीं चाहिए । मुझे जीवन चाहिए, जो आराम, रूपये और रेशम के लिए तरसते-तरसते ऐसा बे-रंग बे-रूप न हो जाए जैसे मैं । कभी मै इस रानी के बराबर थीं .... उससे अच्छी थी । पर आज .... तुम्हारे आदाशों और ख़यालों की

आंच में जलकर मेरा रंग धुआं हो गया, तन कोयला हो गया, कपड़े उसकी आया से भी गिर गए । मन के इस सौदें में मैं बुरी तरह लुट गई हूं ।"[12] इस प्रकार तारा, रानी के बहकावे में आकर अपना अधःपात कर देती है ।

एक दिन रानी, तारा को गिरीश से मिलाती है - "तारा, ये हैं गिरीश - ऐक्सपोर्टर, इम्पोर्टर, कमीशन एजेन्ट, बिज़नेस रिप्रिज़ेण्टेटिव, बीमा एजेन्ट और न जाने क्या-क्या । हम तो बस यह जानते हैं कि जो काम किसी से न हो, इन्हें कमीशन दो और करा लो । बेहद ज़िंदादिल आदमी हैं ।[13] गिरीश कमीशन लेकर गैरकानूनी काम करनेवाला दलाल है । वह हर हफ्ते पार्टी का आयोजन करके उस में बड़े - बड़े अफ़सरों को निमंत्रित करता है । गैर - कानूनी काम करने के लिए उसने एक ऑफ़िस खोल रखा है । जहाँ केवल औरतों को नौकरी दी जाती हैं । ऐसी जगह रानी तारा को नौकरी करने की सलाह देती है ।

तारा, को नौकरी देने के पीछे गिरीश, रानी तथा जयंत की गहरी चाल है । गिरीश तथा जयंत किशोर को रिश्वत देकर अपने जाल में फँसाना चाहते हैं । जयंत बड़ी-बड़ी पार्टियों का आयोजन करके किशोर को अपने घर बुलाता हैं । किशोर को फर्निचर, रेडियों और कालीन जैसे कीमती वस्तुओं का लालच दिखाकर उसे चुप कराना चाहता हैं । मगर ईमानदार और आदर्शवादी किशोर इन चीज़ों को ठुकराते हुए कहता है - "जयंत साहब, ज़िंदगी की गाड़ी जिस तरह अब तक चली है, अगर उसी तरह चले जाए तो शुक्र मनाऊँगा ।"[14] किशोर अपनी ईमानदारी को त्यागने के लिए कदापि तैयार नहीं होता । जयंत तथा सेठ भोगीलाल द्वारा दी गयी रिश्वत ठुकराकर वह ईमानदारी का सबूत देता है ।

किशोर जब रिश्वत लेकर टैंक्स कम करने को इन्कार करता है, तब गिरीश, रानी और जयंत, तारा की सहायता लेते हैं । गिरीश, तारा के मन में किशोर के ईमानदारी के प्रति नफ़रत पैदा करता है । साथ ही वह किशोर की ईमानदारी को एक बीमारी कहकर तारा को उससे छुटकारा पाने की सलाह देता है । तारा और रानी से गहरे संबंध तथा रानी का सदैव परिस्थिति को लेकर तारा को भड़काना इसकारण तारा तथा किशोर में संघर्ष निर्माण होता है । किशोर के रूप, गुण और प्यार के कारण जिस तारा ने अपने पिता की अमीरी को ठोकर मारी थी, वही तारा अब रानी के बहकावे में आकर किशोर की ईमानदारी, कर्तव्य परायणता आदि के खिलाफ विद्रोह करने लगती हैं । ऐसी स्थिति में किशोर पुलिस की सहायता से सेठ भोगीलाल की दुकानपर छापा मारकर सभी महत्वपूर्ण कागजात जप्त करता है । सेठ भोगीलाल घबराकर गिरीश के पास आता है । गिरीश भी अपना कमीशन

प्राप्त करने के लिए रानी द्वारा तारा को अपने जाल में फँसाता है । रानी और गिरीश तारा की बिना राय लिए तारा को गिरीश के ऑफ़िस में नौकरीपर रख लेते हैं ।

किशोर, सेठ भोगीलाल के यहाँ से जप्त किए गये बही खाते अपने घर में रखकर असिस्टेंट कमिश्नर के साथ दौरेपर जाता है । इसी मौके का फायदा उठाकर गिरीश तारा के घर आता है । तारा के साथ मीठी मीठी बातें करके वह तारा के मन में किशोर की ईमानदारी के प्रति नफ़रत और भौतिक सुखों के प्रति लालच निर्माण करता है । बातों ही बातों में गिरीश तारा को 5000 रूपये रिश्वत देकर किशोर ने जप्त किये महत्त्वपूर्ण कागज लेता है । और इसके बदले में वह तारा को अनेक कीमती वस्तुएँ लोकर देता हैं । जब किशोर दौरे से वापस आता है, तब घर में परिवर्तन देखकर स्तंभित होता है । जब वह असलियत जान जाता है । तब वह तारा पर अत्याधिक क्रोंधित होते हुए कहता है - "ओह ! तो अंदाजा सही निकला । मेरी बीवी ने मेरे ही घर में मेरे ही ईमान को पाँच हजार में बेच डाला ।"[15] तारा के इस तरह के बर्ताव के कारण किशोर अत्याधिक दुःखी होता है ।

नसीम, किशोर का दोस्त है । वह भी किशोर की तरह स्वाभिमानी है । वह'नई दुनिया'का संपादक है । जयंत अखबार में झूठी खबरे छपवाने के लिए नसीम को 500 रू. महीने का ऑफ़र देकर खरीदना चाहता है । 'नई दुनिया'में नसीम को दो सौ रूपये मिलते हैं । जयंत पांच सौ देने का वादा करता है । नसीम जानता है कि उसे खरीदने के लिए जयंत उसके सामने लालच के टुकडों को फेक रहा है । नसीम, जंयत की इस ऑफ़र को ठुकराता है । वह जनता के पक्ष में लड़ना चाहता है । जयंत मिल के लिए स्टील के कोटे को ब्लैक-मार्किट में बेच देता है । इस ब्लैक-मार्किट के कुछ सबूत नसीम के हाथ लग जाते हैं । वह अखबार में छपवाकर जयंत के घिनौने रूप को जनता को दिखाना चाहता है । मगर जयंत भ्रष्टाचार के कारण होनेवाली बदनामी से बचने के लिए नसीम के दफ्तर को ही आग लगाता है ।

तारा स्वयं बेईमानी करके किशोर की ईमानदारी को कलंक लगाती है । यही घटना किशोर के स्वाभिमानी, आदर्शवादी और ईमान्दार मन पर भारी आघात करती है । किशोर को अपने इर्द-गिर्द भ्रष्टाचार रूपी अँधेरा ही अँधेरे दिखाई देता है । लेकिन किशोर अपनी चिराग़ की लौं बुझने नहीं देता । जो किशोर जीवनभर भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष करता रहा, जिसके कारण उसे इस व्यवहारी दुनिया में दर-दर की ठोकरे खानी पड़ी । उसे ही अपने पत्नी का गैरों के साथ भ्रष्टाचार करते हुए देखना उसके जीवन की एक विडंबना है ।

किशोर तारा को छोड़कर दूर चला जाना चाहता है, जहाँपर स्वार्थी धोखेबाज तारा की छाया भी न पड़े । किशोर अपनी आदर्शवाद और ईमानदारी को सुरक्षित रखने के लिए अपना तबादला कर लेता है । जाते वक्त वह अपनी बेटी को भी साथ ले जाना चाहता है, ताकि माता के पतन की मनहूस छाया उसपर न पड़े । किशोर के निश्चय को सुनकर तारा के पैर उखाड़ने लगते हैं, क्योंकि जिसके पद के आधारपर वह जो कुछ कर रही थी, वही दूर चला गया तो इस बाजार में उसे कौन पूछेगा । अब तारा को अपनी गलती का पूरा-पूरा एहसास होता है, इसीलिए वह किशोर से अलग नही रहना चाहती । लेकिन किशोर तारा को अपने साथ ले जाने से इन्कार करता है । इसप्रकार किशोर आपनी पत्नी तारा का साहचर्य छोड़ जाता है, लेकिन अपने सिद्धांत और आदर्श मूल्यों को नहीं । यही पर नाटक की कथावस्तु समाप्त होती है ।

अँधेरे का बेटा -

सन 1969 में लिखा 'रेवतीसरन शर्मा' का 'अँधेरे का बेटा' यह एक पारिवारिक नाटक है । एक सैनिक के परिवार की घटनाओं को सैनिक जीवन के संदर्भ में ही यहाँ प्रस्तुत किया है । इस नाटकद्वारा नाटककार ने सिपाही के जीवन की यथार्थता को स्पष्ट किया है । साथ ही सिपाही को उसके मानवीय परिवेश में देखने की कोशिश की है । युद्ध भूमि में खतरों से खेलते-खेलते देश के लिए वीरगति प्राप्त करना और प्रमोशन पर प्रमोशन प्राप्त करना समाज की दृष्टि से सैनिकी जीवन का आदर्श है । समाजद्वारा लादे गए इस आदर्श को सैनिक को अपनाना पड़ता है ।

यथार्थ और आदर्श के द्वंद्व से ग्रस्त और सैनिक जीवन के आदर्शों को, पति से अधिक महत्त्व देनेवाली महत्वाकांक्षी पत्नी के परस्पर संबंधोंपर इस नाटक की कथावस्तु आधारित है । प्रत्येक सैनिक एक ओर सैनिक होता है, तो दूसरी ओर साधारण मानव । साधारण मानव जिंदगी चाहता है, मौत नहीं, और वह मानव की मूल प्रवृत्ति है, जो सैनिक में भी होती है ।

इस नाटक की नायिका निरूपमा को मिलिट्री से लगाव है । कॉलेज के दिनों में वह संतोष नामक सहपाठी से प्यार करती थी । मगर पति के रूप में उसने हमेशा मौत-जिंदगी से बेपरवाह लंबे-तगड़े, स्मार्ट, मिलिट्री ऑफ़िसर को चाहा था, जो हमेशा खतरों से खेलता हो और जिसके नाम का ग्लैमर हो । मेजर नारंग ठीक वैसे ही

थे । इसीलिए निरूपमा संतोष नामक सहपाठी से प्यार करते हुए भी मिलिट्री ऑफ़िसर मेजर नारंग से विवाह करती है ।

नीरू अत्याधिक महत्वाकांक्षी है । वह अपने पति को ऊँचे पद पर देखना चाहती है । वह चाहती है कि जहाँ आर्मी के पूरे खतरे और मौके हो वहाँ उसके पति को होना चाहिए, क्योंकि सिपाही के लिए गौरव और ऊँचे उठाने का वक्त यही होता है । साथ ही प्रमोशन पर प्रमोशन प्राप्त करके एक दिन वे कर्नल बन जाये । निरूपमा इसी आशा में रहती है ।

निरूपमा मिलिट्री ऑफ़िसर मेजर नारंग से विवाह करके खुश है । उसे अपने पति की बहादूरीपर नाज है । वह संतोष को बताती है कि उसके पति एक ठोस सिपाही और शानदार अफ़सर हैं । डर की हिचक का उन में नाम भी नहीं है । वे चीनियों के साथ लड़े हैं । उनके जैसा घुड़सवार, तैरार, पिस्टल शॉट इस स्टेशन पर कोई नहीं है, उन्हें बेस्ट शूटिंग के लिए यह ट्राफ़ी मिली है । इसप्रकार निरूपमा अपने इच्छा के अनुसार विवाह करके सुखी है ।

जब मेजर खन्ना का प्रमोशन होता है, तब नीरू अत्याधिक आनंदित होती है, क्योंकि मेजर खन्ना मेजर नारंग से से कनष्टि थे । नीरू सोचती है कि अब उसके पति का भी प्रमोशन होगा । इसीलिए वह प्रमोशन के पार्टी की भी तैयारी करती है । वह अपने पति के प्रमोशन की पार्टी उसका पुराना प्रेमी संतोषके सामने देना चाहती है, क्योंकि उसे लगता है कि संतोष अपने को बहुत बड़ा राईटर समझता है, वह हमारी आर्मीवालों की शानो-शौकत भी तो देखे ।

निरूपमा ग्लैमर की कायल है । वह हर चीज़ हैवी मेकअप में देखना चाहती है । निरूपमा चाहती है कि उसके पति ने हर एक बात उसकी इच्छा के अनुसार करनी चाहिए । मेजर नारंग भी हर एक बात पत्नी की इच्छा के अनुसार करते हैं । सन् 1960 में चीनियों के साथ हुए युद्ध में मेजर नारंग जाने के लिए तैयार नहीं थे लेकिन केवल पत्नी की इच्छा के खातिर युद्ध के लिए जाते हैं । और मृत्यु की डर से वहीं से भाग आते हैं । यह बात वे पत्नी से छिपाकर रखते हैं । क्योंकि वे पत्नी से अत्याधिक डरते हैं । पहली बार जब संतोष उनके घर आता

है, तब मेजर नारंग उसे बताते हैं कि निरूपमा ने मेरे लिए जीना मुश्किल बना दिया है । वह हर-चीज़ को झिल मिलाता देखना चाहती है । साथ अपने सुपरसेशन होने का कारण भी बताते हैं ।

मेजर नारंग अपने सैनिकी जीवन से भागने की बात पत्नी से छिपाकर रखते हैं । चीनियों के साथ हुए युद्ध से भागने के कारण उनका सुपरसेशन होता है और उनके अन्य साथियों का प्रमोशन । यह बात वे पत्नी से छिपाकर रखते हैं, क्योंकि नीरू किसी भी हालत में अपने पति का प्रमोशन चाहती है । अपने ज्युनिअर मेजर ग्रेवाल के प्रमोशन की बात भी छिपाना चाहते हैं, इसीलिए जब उनका फोन आता है, तब फोन स्वयं उठाते हैं, और पत्नी को झूठ बोलते हैं कि उनके कार का अलाटमेंट आ गया है । दूसरी बार जब मिसेज ग्रेवाल फोन करती है तब नीरू स्वयम् उठाती है, तभी मिसेज ग्रेवाल बताती है कि उन्हे कार नहीं मिली तो उसके पति का प्रमोशन हुआ है । उसी वक्त मेजर नारंग बताते हैं कि उनका रिकार्ड़ खराब था, इसलिए उसका सुपरसेशन हुआ है । मगर नीरू इस बात पर भरोसा नहीं करती ।

नीरू समझती है कि फौजवालों ने उसके पति के साथ धोखा किया है । मेजर नारंग मेजर ग्रेवाल से नीचे नहीं हो सकते । मेजर नारंग एक काबिल ऑफ़िसर होकर भी मिलिट्रीवालों ने उनके साथ धोखा किया है । इसीलिए वह लड़ना चाहती है । उसे लगता हे कि इस जुल्म ने उसके पति का कॉन्फ़ीड़ेन्स खत्म कर दिया है । वे लड़ने की ताकत खो बैठे हैं, इसलिए उनका हौंसला बढ़ाने का प्रयास करती है । अपना हक माँगने के लिए नीरू दिल्ली जाना चाहती है, वहाँ प्रमोद है, उसके पिताजी के पॉलिटिकल फ्रेंड़ है । मेजर नारंग अपनी काबिलियत जानते हैं । इसलिए कहीं नहीं जाना चाहते । तब नीरू उन्हें कहती है कि अगर तुम्हारा प्रमोशन नहीं हुआ तो मैं यह सद्मा बर्दाश्त नहीं करूँगी, मैं जीते जी मर जाऊँगी । किसी भी हालत में वह अपने पति का प्रमोशन चाहती है । प्रमोशन के बिना वह उन्हें पति मानने से भी इन्कार कर देती है क्योंकि प्रमोशन जीत है, आगे बढ़ना है और सिपाही आगे बढ़ता है । इस प्रकार प्रमोशन के लिए नीरू झूठ का सहारा लेने को भी तैयार होती है ।

कर्नल नगांयच भी रिटायर्ड कर्नल है । वे नीरू को समझाते हुए कहते हैं कि कभी-कभी सिपाही के अंदर भी कुछ कमियां होती है, जिसका उसे खुद पता नहीं होता इसलिए उनका सुपरसेशन होता है । मगर नीरू को लगता है कि वे सिपाहीयों की शान लूटा रहे हैं । इसलिए उनपर झूठा इल्जाम लगाकर वहीं से निकाल देती है ।

एक दिन संतोष और मीरा नीरू के घर आते हैं । मीरा कॅप्टन ब्रिज मल्होत्रा की विधवा पत्नी है, जिनकी मृत्यु चीनियों के साथ हुए युद्‌ध में होती है । बातों ही बातों मे नीरू जान जाती है कि मीरा और सकीना के पति उसके पति के हाथों मरे हैं । उसे इस बात का दुःख होता है कि उसके पति डरपोक निकले । अपनी जान बचाने के लिए दूसरों की बलि चढ़ाने की उसके पति को कोई अधिकार नहीं था ।

रात को जब मेजर नारंग वापस आतें हैं, तब नीरू उन्हें फ्रंटपर के प्रसंग के बारे में पूछती है । तब उसे पूरा विश्वास होता है कि मीरा और सकीना के पति की मृत्यू उनके कारण हुई है । तब से नीरू कटकर रहने लगती है । उनसे बातें करना भी छोड़ देती है । मेजर नारंग उसे बताते हैं कि मैंने अनेक बार तुम्हें सच बताना चाहा, लेकिन तुमने मेरा सच न जानना चाहा । तुमने मुझे उन निगाहों से देखा, मेरे आगे अपनी उम्मीदों का वह शानदार फ्रेम कर दिया कि मुझे उस में फिट होना पडा । और सच के बजाय झूठ का सहारा लेकर तुम्हारी निगाहों मे हीरो बनना पड़ा ।

संतोष का कहना कि सभी लोग जिंदा रहना चाहते हैं, इसीलिए वे जुल्म सहते हैं, पर बगावत नहीं करते क्योंकि सिपाही भी एक आदमी होता है - ''सिपाही मरने के लिए चुना जाता है, पर क्या लड़ने के लिए भेजने से पहले हम उसकी आँते, उसके ग्लैडस्, उसकी तकलीफ़ से सहम उठनेवाली खाल रख लेते हैं ।'' [16] इन्सान की सबसे बडी कमजोरी उसकी खाल है, इसीलिए उसे माफ करना होगा । इसका उत्तर देते हुए नीरू कहती है मैं आज तक दो औरतों की नाखूशी में खुश रही हूँ । मैंने दो आदमियों की खालों से अपना खेमा बनाया है । तब नीरू को समझाते हुए संतोष कहता है तुम मीरा की फिक्र मत करो, मैं असमे शादी कर रहा हूँ और सकीना शबनम में खो चुकी है, इसीलिए उसका भी गम तुम्हें न उठाना पड़ेगा ।

इस प्रकार निरूपमा प्रमोशन के बिना मेजर नारंग को पति मानने से भी इन्कार कर देती है । वह कहती है कि तुम्हारे लिए मेरी जिंदगी में कोई जगह नहीं है, इसलिए तुम जा सकते हो । तुम वह नहीं हो जो मैंने समझा था - ''मुझे राख की बुझती चिनगारी नहीं, युरेनियम का फटता एटम चाहिए था, जो आदमी होता है, हुआ है, हुआ होगा ।'' [17] नीरू उन्हें डरपोक का कलंक लगाती है । बार बार उनकी प्रताड़ना करती है, जिससे वह अत्याधिक दुःखी होते हैं, और अपना तबादला अत्याधिक खतरे की जगह करते हैं, जहाँ भारत पाकिस्तान का युद्‌ध शुरू हो रहा था ।

मेरज नारंग अपने को लगा हुआ कलंक धो डालने के लिए भारत-पाकिस्तान युद्ध में शहीद होते हैं । उनका यह प्रयास अँधेरे से रोशनी की तरफ जाने का है । अपने पति की शानदार मौत की खबर सुनकर नीरू दुःखी होती है, लेकिन अंतर्मन से गर्व महसूस करती है । उसे संतोष मिलता है कि वह अन्य सैनिक विधवाओं से नजरें मिलाकर बात कर सकती है । वह सकीना को बताती है मेरे पति शहीद हुए मेरे सीनेपर का बोझ उतर गया । अब मैं तुम्हारी आँखों में आँखे डालकर देख सकूँगी । अपनी जान बचाने के लिए उन्होंने तुम्हारे पति की बलि चढ़ायी थी । तभी सकीना बताती है कि मरने से पहले मेरे पति ने मुझे सबकुछ बताया था । यहीपर नाटक की कथावस्तु समाप्त होती है ।

न धर्म, न ईमान -

सन 1970 में लिखा शर्माजी का न धर्म, न ईमान आदर्शवादी नाटक है । प्रस्तुत नाटक विवाह संबंध विषयक परंपरावादी और आधुनिक नवमतवादी विचारों की हुयी विजय के संदर्भ में लिखा गया है ।

'न धर्म, न ईमान' इस नाटक का प्रमुख पात्र दिनेश है । दिनेश उच्चवर्गीय, सुंदर, शिक्षित और नवमतवादी युवक है । दिनेश के पिता की सौतेली माँ दादी उनके परिवार की मुखियाँ है । दादी अत्यंत पुराणमतवादी एवं परंपरावादी है । परिवार में उसकी एकतंत्री हुकमत है, और घर के सभी लोग उसका आदर करते हैं । दादी ने दिनेश के पिता के दूर के रिश्ते के भाई रामप्रसाद को अपनी हवेली में पनाह दी है । रामप्रसाद की दया नामक लड़की है, जो दिनेश के ही उम्र की है ओर अत्यंत सुंदर है ।

दया और उसके पिता रामप्रसाद गरीब होने के कारण दिनेश के घर में आश्रित है, इसलिए दादी नौकरों की तरह उन दोनों को घर का सारा काम लगाती है । दया, दादी के साथ नमकहरामी नहीं करना चाहती, इसलिए घर का पूरा काम अकेली करती है । मगर दिनेश को यह अच्छा नहीं लगता ।

दिनेश, प्रचलित धर्म से संबंधित विवाह पद्धति की मान्यता के विरूद्ध आवाज उठानेवाला क्रांतिकारी युवक है । वह अपने ही परिवार में आश्रित युवा लड़की दया से प्रेम करता है । दया, दिनेश को दूर के रिश्ते से बहन लगती है । मगर आधुनिक विचारों का नवमतवादी युवक दिनेश दूर के भाई बहन के रिश्ते को नहीं मानता । उसके विचार से बहन वह होती है जो पिता के पराग से फूटती है, और माँ की कोख से उगती है ।

धर्मशास्त्र की तरह एक ही खून में विवाह करने से नस्ल कमजोरी को वह ढकोसला मानता है । दया के स्नेहपूर्ण स्वभाव तथा कार्यतत्पर प्रवृत्ति के कारण दिनेश धीरे-धीरे उसकी ओर अधिकाधिक आकर्षित होता है और दया दिनेश की ओर । दिनेश दया के साथ शादी करके अपना जीवन सुखी बनाने का निर्णय लेता है ।

दिनेश और दया दोनों एक-दूसरे को चाहने लगते हैं । तब दिनेश अपने भविष्य के रंगीन सपने इस प्रकार संजोता है - "दया, मैं तुम्हें अपने ख्वाबों के मखमल और प्यार के रेशम की आग़ोश में सँजोकर रखूँगा! तुम्हारे अंग-अंग को मेरे चुंबनों की गुलाबी पंखुड़ियों के नम होठ सहलाएँगे। मेरी उँगलियाँ तुम्हारे बालों को ऐसे सहलाएँगी, जैसे पत्तियों की पलकोंको सुबह की ओस।"[18] दिनेश जितना प्यार दया से करता है, उतना ही प्यार दया भी दिनेश से करती है। वह दिनेश के प्रत्येक वस्तु को यहाँ तक कि दिनेश के जुतों को भी अपने पल्लू से बड़े प्यार से साफ़ करती है। अपने प्रेम-दिवानेपन का परिचय देते हुए दिनेश से कहती है, अपनी पलके बिछाने की बात सोचती हूँ, तो मुझे लगता है मैं धन्य हो गयी हूँ। दया भी दिनेश से जी जान से प्यार करती है और उसके साथ शादी करके उसकी पत्नी बनना चाहती है।

दादी, पुरानी प्रथाओं को माननेवाली तथा अंधःश्रद्धापर विश्वास रखनेवाली हिन्दू नारी हैं। वह परिवार के सभी सदस्यों को अपने अधीन रखना चाहती है। तभी तो दादी के दबाव में पले हुए दिनेश के पिता का अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है। वे न चाहते हुए भी अपने विमाता के 'हॉ' में 'हॉ' मिलाते रहते हैं। दादी के इच्छा के बगैर परिवार की कोई भी वस्तु इधर की उधर नहीं हिलती। दिनेश जब दया से शादी करने का अपना विचार पिताजी से कहता है, तब पिताजी की मनःस्थिति भी दुःविधाग्रस्त हो जाती है। उसी समय पिताजी दिनेश के विचार का न समर्थन करते हैं न विरोध । यह विचार वे दादी से कहने से पहले ही अपने बेटे को समझाने का प्रयास करते हैं।

दिनेश जब अपने विवाह का प्रस्ताव पिताजी और दादी के सामने रखता है, तब दादी उस प्रस्ताव को बेरहमी से ठुकरा देती है। और अत्याधिक क्रोधित होते हुए कहती है-दिमाग तो खराब नहीं हो गया? चील की बीट तो नहीं खा ली बाप बेटों ने। दादी, किसी भी हालत में दिनेश और दया की शादी नहीं करना चाहती। दादी, दिनेश की शादी दया के साथ न करने का पहला कारण यह है कि दिनेश और दया, दूर के रिश्ते से क्यों न हो भाई-बहन लगते हैं और दादी रिश्ता दूर का हो या पास का रिश्ता-रिश्ता मानती थी। दूसरा कारण यह था

कि दादी को एक ही खून में नस्ल कमजोर होने का डर था और तीसरा महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि दादी स्वयम् को उच्च घर की और दया को नीच घर की मानती थी।

हिन्दू धर्म में भाई-बहन के रिश्ते को पवित्र माना जाता है, और बहन के साथ शादी करना पाप समझा जाता है। दादी की भी यही धारणा है। इस धारणा में विश्वास रखकर दादी दिनेश की शादी दया के साथ करना नहीं चाहती।

दिनेश की चाची दिनेश को समझाने का प्रयास करती है, तब दिनेश साफ-साफ बताता है कि मैं दया को किसी भी हालत में अपनी बनाऊँगा और आज के लिए नहीं, कल के लिए नहीं तो जिंदगी के उस घड़ी तक जब तक किसी को अपना बनाए रखना अपने बस में होता है।

दिनेश, धर्मशास्त्र से रूढ़ि-प्रथा परंपरा से और परिवार के सभी लोगों से विद्रोह करके दया के साथ शादी करने को तैयार था। दया भी दिनेश को पति के रूप में चाहती थी। मगर वह दादी के साथ नमकहरामी नहीं करना चाहती, इसलिए अपने प्यार का बलिदान कर दिनेश से कहती है-"(रोते हुए) दया, मर गई .... (दादी की ओर जाते हुए) दादीजी, मेरा जो चाहकर लो !"[19] मगर दिनेश प्रेम का बलिदान करने को तैयार नहीं होता। दया, दादी की मर्जी के लिए स्वयंम् के इच्छा के विरूद्‌ध कदम उठाकर दिनेश को जिंदगी मे फिर कभी भी मिलने की कसम दिलाकर उससे दूर होती है।

दादी, दिनेश को दया को छोड़कर अन्य किसी भी लड़की से शादी करने को कहती है, तब दिनेश बताता है, जरूर कर लेता अगर मुहब्बत हो जाती। मैंने फैंसला कर लिया है, मैं शादी करूँगा तो दया से वरना नहीं। दया के बिना वह जिंदगीभर कुआँरा रहने की कसम लेता है। उसका कहना है कि विवाह तो उसी के साथ होना चाहिए, जिसे पूरी तरह जाना पहचाना हो, और जिससे मुहब्बत हो।

अब दिनेश, दया के बिना उस घर में पल-भर भी नहीं रहना चाहता इसलिए वह दया को हासिल करने के लिए घर छोड़कर चला जाना चाहता है। जब चाची उसे रूकने के लिए कहती है, तब दिनेश अत्याधिक दुःखी होकर कहता है, चाचीजी, जिस घर में मेरी मुहब्बत के लिए जगह नहीं वह घर मेरा नहीं हो सकता।

दादी, दया की शादी उसकी इच्छा के विरूद्ध अधेड़ उम्र के रामदयाल से करा देती है। मगर रामदयाल से शादी करके दया सुखी नहीं हो सकती। अंतर्मन से दिनेश को चाहनेवाली दया, रामदयाल की नहीं हो सकती। वह अंदर-ही अंदर तिल-तिल गलती है। उसे तपेदीक की बीमारी हो जाती है। रामदयाल और दादी, दया को अस्पताल में भर्ति कराने के अलावा उसे झाड़-फूक की दवाएँ देते रहते हैं। अंधश्रद्धा के कारण वे दया को इक्कीस दिन-तक निर्जल व्रत रखने को कहते हैं। और घर का पूरा काम अकेली दया से करवा लेते हैं। दादी का कहना है कि दया को तन का नहीं तो मन का रोग है। दया, ने दिनेश के साथ जो पाप किया था, वह उसकी सजा भुगत रही है। इसलिए उसे व्रत और पूजापाठ करने को कहती है ताकि जल्द ही जल्द उसकी बीमारी ठीक हो जाए। मगर इससे दया की बीमारी कम होने के अलावा बढ़ती ही जाती है।

दया, का विवाह होने के पश्चात दिनेश उदास रहने लगता है। रात-दिन उसकी यादों में तड़पता रहता है। दया, के साथ शादी करके उसके साथ मधुर जीवन बिताने के दिनेश ने जो सपने देखे थे दादी के कारण वे टूट जाते हैं। दिनेश को मालूम होता है कि दया को तपेदिक की बीमारी हो गई है और उसका पति रामदयाल उसका इलाज करने के अलावा उसके मरने की राह देखता है ताकि जल्द ही जल्द वह तीसरी शादी कर सके। तब दिनेश दया को दिया हुआ वचन तोड़कर उसे मिलने आता है। मगर दया को यह अच्छा नहीं लगता क्यों कि दिनेश को देखकर उसकी पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं, और वह अपने आप पर काबू नहीं पा सकती, इसलिए वह दिनेश को वहाँ से चले जाने को कहती है, उसी वक्त दिनेश उसे कहता है - ''चला जाऊँगा.... लेकिन एक पल के लिए तो उस चेहरे को निहारने दो, जिससे कभी मैं अपनी दुनिया बसाने चला था। ''[20] बहुत दिनों से दिनेश ने दया को देखा नहीं था इसलिए वह दया को जीभर देखना चाहता है।

दिनेश को मालूम है कि दया की शादी हो चुकी है, और वह उसकी कभी नहीं हो सकती, फिर भी वह दया का इन्तजार करता है। वह दया की खुशी में ही अपनी खुशी मानता है, इसलिए वह दया को खुश देखना चाहता है। दया से बिछड़कर दिनेश दया को एक पल भी नहीं भूल पाता। जब उसे मालूम होता है कि दया की बीमारी दिन-ब-दिन बढ़ती ही जाती है तब दिनेश उसका इलाज करने के लिए डाक्टर को भेज देता है। मगर दादी उनपर झूठा इल्जाम लगाकर घर से निकाल देती है।

अब दया की बीमारी इतनी बढ़ती है कि वह खून की उल्टियाँ कर देती हैं। खून देखकर रामदयाल घबरा जाता है और डाक्टर को बुलाना चाहता है, मगर दादी दया का इलाज स्वयम् करना चाहती है। तब दिनेश पिताजी के द्वारा रामदयाल को समझाकर दया को अस्पताल में ले जाता है। डाक्टर दया का आपरेशन करना चाहते हैं, घर के किसी भी सदस्य को खून देने को कहते हैं। जब रामदयाल को पूछा जाता है, तब वह इन्कार करता है और दादी कहती है, अगर मैं इसतरह के रिश्ते मानने लगी, तो सारे जगत की दादी बनूँगी। तब डाक्टर उसपर क्रोधित होते हुए कहते हैं-"जिस दिन पोता शादी करने चला था उस दिन यह उसकी बहन थी, लेकिन आज तुम्हारी पोती ही नहीं।"[21]

अब रामदयाल खून खरीद लाना चाहता है, तब भी दादी उसका विरोध करती है और रामदयाल से कहती है - "अक्ल के कोल्हू। तू अपनी लुगाई के बदन में जाने किस-किस का खून डलवा उसे क्या बनाने जा रहा है? अरे, उसकी जान तो सीख ली, अब उसका अगला जन्म तो खराब ना कर।"[22] दादी, रामदयाल को बिना खून के, दया, को मारने की सलाह देती है। अतः स्पष्ट है, दादी और रामदयाल पुरानी प्रथाओं के समर्थक हैं।

दिनेश को जब मालूम होता है, तब दिनेश स्वयम् खून देने के लिए तैयार होता है। वह डाक्टर से कहता है, दया को खून मै दूँगा, जिंदगी जिसकी है उसके किसी काम आ जाए, इससे खूबसूरत अंजाम क्या हो सकता है। दया, के आपरेशन के बाद घर और परिवार से उबा दिनेश कानपूर जाना चाहता है, जहाँ उसे स्कूल मास्टर की नौकरी मिल गई है। जाते वक्त वह चाची से कहता है, बहुत दिनों से मैंने दया को देखा नहीं था, देख लिया उसके इतने करीब जाकर उसके बिना मैं कैसे रह सकूँगा। चाँद निकलता है तो समंदर से नहीं रहा जाता तो दया को देखे बिना मैं कैसे रह पाऊँगा तब चाची, दिनेश को डाक्टर की बात मानकर किसी और लड़की से शादी करने को कहती है, तब दिनेश उसे कहता है- डाक्टर सिर्फ इलाज करते हैं, उन्होंने दर्द देखे हैं, सहे नहीं हैं।

बीमारी से अच्छी हुई, दया, अब घुट-घुटकर एवं सिसक-सिसक कर मरने की अपेक्षा साहस से स्वतंत्र होकर जीना चाहती है। दया, अब रामदयाल का घर छोड़कर दिनेश के पास आती है। ब्याह के पहले दिनेश की थी, अतः वह दिनेश की होकर रहने का निर्णय लेती है। दिनेश उसकी ही प्रतीक्षा में था। वह विद्रोही बनती है, और अपने सभी बंधनों को तोड़कर दिनेश के पास आती है। वह दिनेश को कहती है, दिनेश, आज मैं

आजाद हूँ। उनका जो कुछ मुझ में था, मैंने खून के साथ थूक [redacted] दिया। आज अगर मुझ में किसी का कुछ है, वह तुम्हारा हैं। आज पहली बार मैं अपनी हूँ, बेझिझक उसकी हो सकती हूँ, जिसकी थी।

अंत में दिनेश को पाने के लिए दया धर्म और ईमान दोनों को भी छोड़ देती है। दिनेश अपनी इच्छा के अनुसार उसे पत्नी के रूप में स्वीकार करता है। और पिताजी से आशीर्वाद लेते हैं। यहीपर नाटक की कथावस्तु समाप्त होती है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शर्माजी के 'चिराग़ की लौं' अँधेरे का बेटा और 'न धर्म, न ईमान' इन नाटकों की कथावस्तु सरल स्पष्ट और रंगमंचीयता की दृष्टि से विकसित हुई है। 'चिराग़ की लौं' [redacted] नाटक का कथानक सामाजिक स्थिति की वह काली तस्वीर प्रस्तुत करता है जिसके दृश्य काला-बाजार, भ्रष्टाचार, और अनैतिकता की स्याही से रंगे हुए हैं। साथ ही यह प्रेम के उस खोखले आदर्श को प्रस्तुत करता है, जो यथार्थता की निमर्म थपेड़े खाकर कच्चे शीशे की भाँति चूर-चूर हो जाता है। प्रस्तुत नाटक स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है। आज समाज में स्वार्थ सिद्धि के पीछे भागते लागों का सिद्धांत हीन जीवन देखने को मिलता है। घूसखोरी काला-बाजारी तथा बेरोजगारी ने देश के आर्थिक ढाँचे को बुरी तरह झकझोर कर रख दिया है। छोटे से छोटे कलर्क से लेकर बड़े-बड़े अफ़सरों तक सारे गैर कानूनी कार्य करके वैभव पूर्ण जीवन के लिए संपत्ति जूटा रहे हैं।

प्रस्तुत नाटकद्वारा लेखक ने दिखाया है कि आज के इस भौतिकवादी युग में नैतिक पतन के कारण ईमानदारी से आदर्श मूल्यों को लेकर जीना कठिन कार्य हो गया है, और विशेष कठिनाई उस समय होती है, जब कोई पत्नी ही अपने पति को अनैतिक कार्य करने को प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में चारित्रवान व्यक्ति के लिए पत्नी का साहचर्य छोड़ना आसान है, सिद्धांत और आदर्श मूल्यों को नहीं।

'अँधेरे का बेटा' नाटक में नाटककार ने मेजर नारंग के रूप में सैनिक के दोहरे व्यक्तित्व का चित्रण किया है। प्रत्येक सैनिक एक ओर सैनिक होता है, तो दूसरी ओर साधारण मानव। साधारण मानव जिंदगी चाहता है, मौत नहीं और वह मानव की मूल प्रवृत्ति है, जो सैनिक में भी हो सकती है।

मिलिट्री के सैनिकी जीवन के ग्लैमर की कायल निरूपमा जान-बुझकर लंबे, तगड़े, स्मार्ट एवं बहादूर मिलिट्री ऑफ़ि सर मेजर नारंग से विवाह करती है। वह हमेशा अपने पति को उसी ग्लैमर में देखना चाहती है, जो प्रमोशन पर प्रमोशन प्राप्त करके एक-दिन कर्नल बन जाये। मगर सन 1962 में चीनियोंके साथ हुए युद्ध में लड़ते-लड़ते मेजर नारंग अपने अन्य साथियों को आगे करके स्वयम् पीछे हट जाते हैं। जिसमें उनके अन्य दो साथियोंकी मृत्यु हो जाती है। इसी वजह से उनका सुपरसेशन होता है।

सैनिक अपनी मूल यथार्थ वृत्ति की प्रबलता से कभी युद्ध भूमि से जान-बचाकर भाग आता है तो समाज और पत्नी की निगाहों से गिर जाता है। पत्नी अपने पति को मौत-जिंदगी से बेपरवाह रूप में देखती है और हर हालत में उनका प्रमोशन चाहती है। मगर जब पति का सुपरसेशन होता है, तब पत्नीद्वारा प्रताड़ित और उपेक्षित होने से उनका जीवन दुःख से भर जाता है, और अपने को लगा हुआ कलंक धो डालने के लिए पति युद्ध में लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त करता है।

'न धर्म, न ईमान' शर्माजी का आदर्शवादी नाटक है, जिस में आदर्श प्रेम की वास्तविकताओं का परिचय एवं मानव हृदय में जलते प्रेम के दिये की क्षीण लौं पर शाश्वत आदर्श प्रेम के दर्शन कराए हैं।

प्रस्तुत नाटक का नायक दिनेश आदर्श और भावुक प्रेमी है, जो दया से प्यार करता है। दिनेश और दया इस नाटक के देवदास और पारो हैं। नायक की त्रासदी यह है कि पारिवारिक परंपराओं के कारण वे एक-दूसरे को चाहते हुए भी विवाह नहीं कर पाते। पर जो एक-दूसरे के सांस और एक-दूसरे का सपना थे। अलग होकर भी सचमुच अलग नहीं हो पाते, क्यों कि दोनों का प्रेम वास्तविक हैं, जिसका निर्वाह दिनेश अंत तक करता चलता है। जब दुनिया दया को मौत की घाटी में अकेली छोड़ देती है, तब दिनेश भी दया के बिना जी नहीं पाता, तो वे वह कदम उठाते हैं, जो देवदास और पारो ने भी नहीं उठाये। दिनेश का प्रेम देवदास से भी ऊँचा है। यह नाटक परंपरागत प्रेम कथाओं की [illegible]से हटकर है । प्रस्तुत नाटक हमारे पारिवारिक संदर्भ से जुड़ा प्रेम और विवाह की समस्या का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता हुआ आदर्श प्रेम को रेखांकित करता है जिस में कोई जांति-बंधन नहीं होते, उस में तो पारंपारिक दो हृदयों की मिलन की अभिलाषा रहती है।

संदर्भ-सूची

1.	डॉ. राधेश्याम वाजपेयी	- हिंदी नाट्यकला तथा रेडियो नाटक -	पृ.197
2.	डॉ. रेवतीसरन शर्मा	- अँधेरे का बेटा -	पृ. नाटक की भूमिका से अवतरित
3.	भरतमूनि	- नाट्यशास्त्र -	पृ.84.85
4.	भरतमूनि	- वही -	पृ.10
5.	डॉ. रेवतीसरन शर्मा	- चिराग़ की लौं -	पृ.दो शब्द से
6.	डॉ. श्याम शर्मा	- आधुनिक हिंदी नाटकों में नायक -	पृ.113
7.	डॉ. रेवतीसरन शर्मा	- चिराग़ की लौं -	पृ.8
8.	वही	वही	पृ.28
9.	वही	वही	पृ. 20
10.	वही	वही	पृ.31
11.	वही	वही	पृ.30
12.	वही	वही	पृ.32
13..	वही	वही	पृ.41
14.	. वही	वही	पृ.51
15..	वही	वही	पृ.83

16. . वही वही पृ.94

17. . वही वही पृ.74

18. डॉ. रेवतीसरन शर्मा - न धर्म न ईमान - पृ.6

19. . वही वही पृ.23

20. . वही वहीं पृ.33

21. . वही वहीं पृ.55

22. . वही वही पृ.56